विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

वर्ग अष्टम शिक्षिका सरिता कुमारी

विषय हिंदी दिनांक 21- 05- 2020

सुप्रभात बच्चों।

'निराशा में भी समर्थ' के कवि *भवानी प्रसाद मिश्र* की कविता आप पढ़ने जा रहे हैं ।उनकी लिखी अन्य पंक्ति प्रस्तुत है।

देश हो या विदेश मेरा हो कि तेरा हो

हो विशद विस्तार चाहे एक घेरा हो

तू जिसे छू दे दिशा कल्याण हो उसकी

तू जिसे गा दे सदा वरदान हो उसकी।

प्राणी वही प्राणी है

.....भवानी प्रसाद मिश्र

पिछले अध्ययन सामग्री में आपने कवि परिचय पढा और जाना। साथ ही कविता का मूल भाव भी जाना। कविता की भाषा शैली पर गौर करें।

भाषा शैली

इस कविता की भाषा खड़ी बोली में बहुत ही सरल और सहज है।थोड़ा संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों का प्रयोग है। साथ ही बोलचाल के प्रयोग में लाए जाने वाली शब्दों का भी तालमेल है। पंक्ति बहुत छोटी छोटी है। लगभग चार से पांच

शब्दों में हर पंक्ति पिरोया हुआ है जो बड़ा खूबसूरत बन पड़ा है।

कविता- **प्राणी वही प्राणी है**

तापित को स्निग्ध करे,
प्यासे को चैन दे;
सूखे हुए अधरों को
फिर से जो बैन दे
ऐसा सभी पानी है|

लहरों के आने पर,
काई-सा फटे नहीं;
रोटी के लालच मे
तोते-सा रटे नहीं
प्राणी वही प्राणी है|

लँगड़े को पाँव और
लूले को हाथ दे,
सत की संभार में
मरने तक साथ दे,
बोले तो हमेशा सच,
सच से हटे नहीं;
झूट के डराए से
हरगिज डरे नहीं|
सचमुच वही सच्चा है|

माथे को फूल जैसा
अपने को चढ़ा दे जो;
रूकती-सी दुनिया को
आगे बढा दे जो;
मरना वही अच्छा है|

प्राणी का वैसे और
दुनिया मे टोटा नहीं,

कोई प्राणी बड़ा नहीं

कोई प्राणी छोटा न ही

कविता का शुद्ध शुद्ध वाचन करें और कंठस्थ करें।

****

सुरक्षित रहें, खुश रहें।

इसी शुभकामनाओं के साथ दोबारा कल मिलते हैं -शेष अध्ययन सामग्री के साथ...

****